मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 100, जनवरी(प्रथम), 2021

मांद से ड्राइंग रूम तक

मुरलीधर वैष्णव

तीन बघेरे, दो बब्बर शेर, एक केशरीसिंह, एक भेड़िया तथा दो बारहसिंगे - ये सभी कभी जंगलों में जरूर विचरे होंगे, लेकिन जिस प्रकार इन सभी की खालों में भूसा और मसाला भर कर इन्हें जीवित मुद्रा में सजा कर रखा गया था, उस से यह स्पष्ट था कि संसार में मनुष्य से बढ़कर और कोई खतरनाक जीव नहीं है।

यह एक भूतपूर्व महाराजा के विशाल महल की बैठक का बड़ा कमरा था। मैं एक बघेरे के मुंह को अपने हाथों से सहलाते हुए उस की कांच की बड़ी-बड़ी आंखों में किसी महाराजा या उन के शिकारी सेवक की पाश्विकता की परछाई ढूंढ़ रहा था। कुछ अजीब आकर्षण था इस बघेरे की आंखों में। तभी चौकीदार की घंटी बज उठी जो इस बात का संकेत थी कि अब महल देखने का समय पूरा हो गया है। मैं बाहर चला आया।

मेरा रिक्शा अब बाहर शहर के सिविल लाइंस लेन में बने मंत्रियों के भव्य बंगलों के बीच चैड़ी सड़क पर जा रहा था। महल में बंद उन बेजान शेरों व बघेरों ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा था। मुझे लगा कि वे सभी वहां से मुक्त हो कर जीवित रूप से मेरे मस्तिष्क में घुस आए हैं। मेरे मन में क्षोभ के साथ साथ एक अजीब सी हलचल मच गई थी।

मैं सोचने लगा था कि समय की करवट ही तो है कि अब राजाओं के महल महल न होकर मंत्रियों के विशाल भव्य बंगले हैं। पहले जब जंगलों में बहुत सारे शेर, बघेरे आदि जानवर थे तब महाराजा एवं उनके शिकारी-सेवक जानवरों का शिकार कर के उनके जिस्म महलों में सजाते ही थे। लेकिन अब तो इनके वंशलोप का ही समय आ गया है। फिर भी कलियुग में कुछ भी तो अनहोनी नहीं। हमारे देश में लावारिस इंसानी लाशों की कमी नहीं है। संभव है, समय की अगली करवट में आज के 'महाराजा' ऐसी लाशों के कंकालों पर कलात्मक रंग करवा कर अपनी अपनी बैठकों के कक्षों को सजाने लगे या फिर कोई रासायनिक मसाला ही लाशों में भरवा कर सजावट के नए आयाम पा लें। एक और बात भी संभव है। हर जीव के विनाश और विकास की प्रक्रिया अभी समाप्त थोड़े ही हो गई है। प्रकृति का मिजाज कभी यों भी बदल सकता है कि सभी शेष बचे शेर, बघेरे शत प्रतिशत आदमखोर बन कर अपनी मांद गुफाओं में इंसानी मुंड सजाने का सौंदर्य बोध प्राप्त कर लें।

रिक्शे से उतर कर मैं चिड़ियाघर की ओर पैदल ही बढ़ गया था। सुना था कि वहां हाल ही में वन विभाग वाले एक भयंकर बघेरे को घायल अवस्था में पकड़ लाए थे। पास ही के एक गांव के पनघट पर उसने एक औरत पर हमला कर दिया था जिस पर गांव वालों ने बरछे व कुल्हाड़ियों से उसे घायल कर जाल में फांस दिया था।

चिड़ियाघर बंद होने में करीब पन्द्रह मिनट ही शेष थे। मैं उस घायल बघेरे की झलक मात्र देखने के लिए आतुर था। पिंजरे के बाहर दर्शकों की काफी भीड़ थी। बघेरा अपने अगले दाएं पैर से जख्मी होते हुए भी इस नए माहौल के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करते हुए पिंजरे में टहल रहा था। बीच-बीच में अपनी दहाड़ से निष्फल पुकार भी कर रहा था। शायद महल में बंद कांच की आंखों वाला आकर्षक और भरपूर लंबाई वाला बघेरा राजाओं का युग देख लेने के बाद जनतंत्र-युगीन पिंजरे में पहुंच गया था।

मैं उद्‌धिग्न सा अपने घर की ओर चल पड़ा। अब मैं अपने शयनकक्ष में था। कभी महल में बंद बघेरे की स्थिर किन्तु खौफ़नाक मुद्रा और कभी चिड़ियाघर में बंद घायल बघेरे का आक्रोशपूर्ण चेहरा मेरे मस्तिष्क पटल पर कौंध रहा था। मुझे दोनों में एक अजीब संबंध लगा था। पिंजरे की कैद कहीं अज्ञात लोक से पहले एक संक्षिप्त पड़ाव तो नहीं...? शायद ये बघेरे कुछ कहना चाहते थे, पर सुनने वाला कोई नहीं था।

दिन भर की थकान से मेरी पलकें भारी हो चली थी।

मैं चिड़ियाघर के बघेरे से साक्षात्कार के लिए जा रहा हूं। अब मैं बघेरे के पिंजरे के सामने था। अलसाया सा बघेरा अपने अगले पैर के घाव को मुंह से चाट रहा था।

मेरे परिचय व अभिवादन का उत्तर एक खानदानी उबासी से देते हुए बोला, ''अच्छा तो हमारा भी ख्याल आया है आप को।''

''जी हां, आपकी काफी तारीफ़ सुनी थी, इसीलिए हाजिर हो गया। ''

बिना समय गंवाए तथा अपने व बघेरे के बीच लोहे की मोटी छड़ों की खिड़की से सुरक्षा महसूस करते हुए मैं सीधे मतलब की बात पर आ गया।

''आप अपना जंगल छोड़ कर औरतों के चक्कर में कैसे पड़ गए ? पनघट की औरतों पर हमला... क्या यह सब सही है ?'' मैंने पहला प्रश्न किया।

बघेरा सहसा गंभीर हो गया, बोला ''आप का मतलब है कि मीलों तक पीने को एक बूंद पानी भी नसीब न हो और हम प्यासे मर जाएं। क्या इंसानों के पनघट से दो घूंट पानी के भी हम हकदार नहीं है ? तीन दिनों का भूखा प्यासा मैं गांव की ओर आ गया था। एक भेड़ खाने को मिल गई। केवल पानी पीने कुएं के पास बने हौज की तरफ आ रहा था। उसी समय एक औरत घबराहट व बौखलाहट से मेरे सामने ही दौड़ पड़ी। मैं पशु बुद्‌धि ठहरा। सोचा, मुझ पर हमला करने आ रही है। बस, उसे हल्का सा पंजा मार दिया। पंजा तो उसकी ओढ़नी में उलझ जाने के कारण मामूली सा लगा था। वैसे मुझे इसका सख्त अफ़सोस है।''

''आप तीन दिनों से भूखे थे ? वह कैसे?'' मैंने पूछा।

आप कभी जंगलों में जाकर असली नजारा देखें तो आपको पता चलेगा कि वहां क्या होता है। बस यह समझ लीजिए कि वहां भूखे-प्यासे मरने से यह कैद अच्छी है। यहां कुछ खाने-पीने को मिल तो जाता है।'' उसने ठंडी आह भरते हुए कहा।

''लेकिन कहां जंगल का एक छत्र राज्य और कहां यह कैद, कुछ बात जंची नहीं।'' मैंने उसे कुछ छेड़ते हुए कहा।

''अब जंगल कहां है जनाब! जंगलों को दिन-रात काटने वाले बेरहम ठेकेदार पेड़ों के साथ-साथ जंगली जानवरों को भी काटते रहते हैं। हमारा भोजन खरगोश, हिरण वगैरह तो आप लोगों की दावतों में तरह-तरह के व्यंजनों के रूप में सजते हैं, फिर क्या हम घास खाएं या आपके राजनेताओं की तरह आदमखोर हो जाएं। क्या करें ? बोलो कहां जाएं ?'' यह कहते हुए बघेरे का चेहरा उत्तेजना से और अधिक खूंखार हो गया था।

अपना पूरा गुबार निकालते हुए वह बोला, ''अजीब आलम है आपके इंसानी राज का। दफ्तर में अफसर पेड़ लगाने की बात करता है और उधर जंगल के जंगल मिली भगत से साफ करवा देता है। फिर जंगल नहीं होंगे तो हम जानवर कहां जाएंगे? एक ओर वन्य प्राणी संरक्षण विभाग हमारी सुरक्षा से संबंधित प्रदर्शनियों का नाटक कर, हमारी लुप्त हो रही जाति पर घड़ियाली आंसू बहाता है तो दूसरी ओर हमें धोखे से मरवा कर हमारी खालों से अपनी तिजोरियां भरता है। अरे बाबूजी, ऐसा तो हमारे जंगल के कानून में भी नहीं होता। हम भी शिकार पर जाने से पहले अपनी दहाड़ से ऐलान करते हैं कि हम आ रहे हैं। धोखे से तो नहीं मारते हैं किसी को।

मैं अच्छी तरह समझ चुका था कि बघेरा इस दुनिया में अपना पहले नम्बर का शत्रु आदमी को ही मानता है और उससे सख्त नफरत करने के उसके अपने सशक्त तर्क हैं। मैं भी इसी मनुष्य-जाति का होने से उसके

सामने ग्लानि महसूस करने लगा। इसलिए विषय बदलने का असफल प्रयास करते हुए मैंने उससे पूछा, ''आपके परिवार में आपकी पत्नी... बच्चे...''

मेरी बात काटते हुए वह बोला, ''क्यों घाव हरे करते हो बाबू। थे कभी, बच्चे भी थे। मेरी बघेरिन भी थी। तुम्हारी मनुष्य जाति में कुछ अजीब शौक होता है - दूसरों के घर उजाड़ने का। और जब आदमी आदमी का ही घर उजाड़ देता है तो उसे हमारा घर उजाड़ने का क्या मलाल होगा।'' अचानक बघेरे के चेहरे पर क्रोध, विषाद व घृणा की मिश्रित छाया तैरने लगी।

भर्राए गले से वह बोला, ''मैं एक दिन दोपहर में अपने सात-सात दिन के दोनों प्यारे बच्चों को उनकी मां का स्तनपान करते हुए छोड़ कर शिकार के लिए दूर निकल गया था। लौटने पर मालूम हुआ कि मेरी बघेरिन को ठेकेदार के आदमियों ने गोलियों से भून डाला और मेरे दोनों बच्चों को चुरा कर ले गए। आप अनुमान लगा सकते हैं कि मुझ पर क्या गुजरी होगी। बस उस हादसे के बाद मेरी एक ही तमन्ना बची थी, जो पूरी हो गई।''

''वह क्या ?'' मैंने उत्सुकता से पूछा।

उसी रात मैंने जिंदगी की पहली खूनी घात आदम-जात पर लगाई थी। शराब के नशे में धुत उस ठेकेदार को मैं मुंह से पकड़ कर घसीटता हुआ दूर ले गया। उसके आदमी भी शराब के नशे में धुत पड़े थे। सो मेरा पीछा नहीं कर सके. अपनी बघेरिन व बच्चों के बिछोह का बदला मैंने उस ठेकेदार का खून पी कर लिया। वैसे उसके खून का स्वाद मुझे पसंद नहीं आया था। शायद यही कारण था कि उसके बाद कई बार कई दिन तक भूखे रहने पर भी तथा मनुष्य जात के शिकार करने का अवसर प्राप्त होने पर भी मैं आदमखोर नहीं बन पाया। अब भी आदमी के मांस व खून से मुझे घिन्न आती है।'' बघेरा इतना कुछ सहज भाव से कह गया।

उसके इस लोमहर्षक बयान से न जाने क्यों मेरे मन में घबराहट-सी होने लगी थी। मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि किसी मांसाहारी जानवर को आदमी के मांस व खून से इस तरह घृणा हो सकती है। पसंद और नापसंद के अधिकार का प्रयोग तो आदमी को ही जानवरों के मांस के संबंध में करते हुए देखा था। खैर, बघेरे का दिलेर व्यक्तित्व मेरे दिल में गहरा उतर चुका था। उसकी करुण कहानी से मुझे इन्सान के पशुत्व के बारे में सोचने की एक नई दिशा मिल गई थी।

अंत में जाते-जाते मैंने औपचारिकतावश जो प्रश्न किया उसके उत्तर ने मुझे भीतर तक हिला कर रख दिया।

''चिड़ियाघर देखने आने वाले दर्शकों से तो आपको कोई शिकायत नहीं है ?''

अपने पैर के घाव पर बैठ रही मक्खियों को अपनी पूंछ से उड़ाते हुए उसकी आंखों में एक अजीब व्यथा झलकने लगी।

''भले लोग ही आते हैं यहां। लेकिन कल एक मेम साहिबा कार से आई थीं। बड़ी देर तक मुझे ललचाई निगाहों से देखती रहीं। फिर जैसे कि मेरी तारीफ कर रही हो, बोली

'हाय, कितना सुन्दर है यह।

पता नहीं क्यों, बैचेनी वश सिहरन-सी दौड़ गई मेरी रीढ़ में। चलने को उठे मेरे पैर ठिठक गए थे। एक बार फिर मैं खिड़की के पास जा बैठा और बघेरे को ढांढ़स बंधाते हुए बोला, ''मैं एक स्थानीय पत्र का अदना सा पत्रकार जरूर हूं, लेकिन आप मुझ पर भरोसा रखें, अक्सर मिलता रहूंगा आपसे।''

यह आश्वासन व साक्षात्कार के लिए उसे धन्यवाद देकर मैं बड़े भारी मन से घर लौटा। शून्य में ताकती बघेरे की आंखें और उनमें समाई उसकी व्यथा मुझे बेचैन कर रही थी। मूड ठीक न होने पर भी कुछ दिन बाद मैं एक बड़े राजनेता की कोठी पर उनके पुत्र के विवाह के उपलक्ष में आयोजित रात्रि भोज में शरीक होने अपने पत्रकार मित्रों के साथ चल पड़ा था।

मस्ती भरा नृत्य चल रहा था। मदिरा ने गले से उतर कर लोगों के दिमाग की ओर चढ़ना शुरू कर दिया था। नृत्य करते-करते अचानक कुछ देख कर मेरा नशा काफूर हो गया। मैं अपने साथी से क्षमा मांगते हुए नेता जी के उस विशाल सुसज्जित हाल के कोने में जा पहुंचा जहां विशेष फोकस लाइट्स के दूधिया घेरे में एक

असाधारण लम्बाई के सुन्दर बघेरे को उसकी ताजा खाल में मसाला भर कर, अत्यंत स्वाभाविक मुद्रा में खड़ा किया गया था। उसके पैर पर घाव के कारण फटी हुई चमड़ी व उसके व्यक्तित्व से उसे पहचानने में मुझे कोई समय नहीं लगा।

उसका रोबिला चेहरा मेरी ओर मुखातिब था। उसकी आंखें कह रही थीं - ''क्यों अपने रंग में भंग डालते हो बाबू,. मेम साहिबा ने सच ही कहा था न। कितना जंच रहा हूं मैं यहां। हमारी असली जगह अब जंगल की मांद नहीं बल्कि बड़े लोगों के ड्राइंग रूम ही हैं। कितना खुश हूं मैं यहां। न खाने की फिक्र है, न पीने की। सबका आकर्षण बना हर पल मुस्तैदी से खड़ा हूं।''

अपनी अश्रुपूरित आंखों से मैं कभी बघेरे को देखता तो कभी उस भोज में पसरे दुर्गन्धी वैभव को। बघेरे के सामने मैं एक अपराधी की भांति मौन खड़ा था। शायद मेरा जमीर भी कहीं सिसक रहा था। डिस्को संगीत और डांस कर रहे जोड़ों को इस बघेरे से कोई सरोकार नहीं था। कभी पशु की इन्सानियत और कभी इन्सान के पशुत्व के बारे में सोचते हुए मुझे उस खूनी बंगले में घुटन महसूस होने लगी।

इतने में एक सुसज्जित चपरासी एक सुनहरी ट्रे में व्हिस्की के नए पैग बना कर ले आया। विशेष मनुहार के लिए एक वन अधिकारी अपने बंद गले के काले कोट की जेब पर कुछ प्रशस्ति मेडल लटकाए उसके साथ आया था। मुझे वे पैग व्हिस्की के नहीं बल्कि बघेरे के ताजे खून से लबालब भरे लगे। अचानक एक चीख के साथ मैंने उस ट्रे को अपने हाथ के झपट्टे से उछाल दिया।

इसी के साथ मेरी पत्नी के हाथ से सुबह की चाय की ट्रे उछल कर मेरी रजाई और उस पर पड़े ताजे अखबार पर गिर पड़ी।

मैं जाग चुका था। खिड़की से सुबह की सुहावनी धूप झांक रही थी। मेरी आंखें चाय से भीगे अखबार के उस भाग पर केन्द्रित थी। जहां एक समाचार-शीर्षक छपा था, ''चिड़ियाघर में नए बघेरे की कथित इंफेक्सन से मृत्यु।''

--------000--------

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें